हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-११ जून, २००९

सम्पादकीय

ऑस्ट्रेलिया में अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय विद्यार्थी

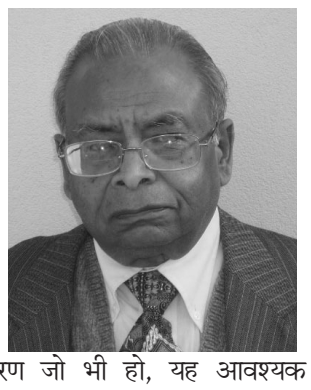

ऑस्ट्रेलिया में अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय विद्यार्थियों के बारे में, हम गत वर्ष नवम्बर-दिसम्बर में पहले भी एक लेख प्रकाशित कर चुके हैं। इस लेख के अंत में आशा व्यक्त की गई थी कि विक्टोरिया सरकार द्वारा आयोजित समिति, मेल्बर्न तथा अन्य स्थानों पर भारतीय विद्यार्थियों पर हो रहे लूट-पाट और हिंसा के मामलों पर क़ाबू पा सकेगी। दुर्भाग्यवश ऐसा न हुआ और कुछ भारतीय विद्यार्थी हिंसा का शिकार होते रहे। फलस्वरूप, भारत सरकार ने ऑस्ट्रेलिया की केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों के सामने यह मामला उठाया और भारत में इस सम्बन्ध में प्रदर्शन हुए तथा ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री, केविन रड का पुतला जलाया गया। मेल्बर्न तथा सिडनी में भी भारतीय विद्यार्थियों ने प्रदर्शन किया। विक्टोरिया पुलिस के अनुसार, भारतीय विद्यार्थी अक्सर लूट-पाट का शिकार होते हैं क्योंकि वे 'लैपटॉप कम्प्यूटर' 'आई-पॉड', 'मोबाइल फ़ोन' तथा नग़द डालर ले कर अपने साथ चलते हैं और बहुधा रात-बिरात अकेले सार्वजनिक यातायात से यात्रा करते हैं। पुलिस के अनुसार ये आक्रमण अवसरवादी हैं न कि जातीय। कारण जो भी हो, यह आवश्यक है कि इनकी पुनरावृत्ति होने से रोका जाये अन्यथा इसका बुरा असर न केवल ऑस्ट्रेलिया की छवि बल्कि ऑस्ट्रेलिया की अर्थ-व्यवस्था पर भी पड़ सकता है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी यहाँ की अर्थ-व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हाँ एक बात और, भारतीय मीडिया ने स्थिति को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया है। भारतीय रिपोर्टों से ऐसा प्रतीत होता है, मानो ऑस्ट्रेलिया में रहने वाला हर भारतीय ख़तरे में है। यह सच नहीं है। यहाँ भारतीय मूल के अधिकांश लोग सुख-शांतिमय जीवन बिता रहे हैं।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में काव्य-कुंज में कुछ रोचक कविताएँ हैं, तीसरी संस्कृति पर एक लेख है। कहानी 'समय शेष' का ५वाँ भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

मदिरा ढलने पर

- हरिहर झा, मेल्बर्न

नज़रों से ग़श आया साक़ी
मदिरा ढलने पर क्या होगा!

प्यास बुझाने पानी माँगा,
अमृत की अब चाह नहीं
नन्हा दीपक साथ में हो
आवश्यक जगमग रात नहीं
मौत आये यों सज-धज कर,
फिर स्वर्गलोक में क्या होगा!
नज़रों से ग़श आया साक़ी
मदिरा ढलने पर क्या होगा!

दुनिया में नहीं कोई पराया
सब के सब अपने देखे
सबकी यादें मीठी-मीठी
फिर मिलने के सपने देखे
क्या ख़ूब लुभाती मृगतृष्णा
तृप्ति मिलने पर क्या होगा!
नज़रों से ग़श आया साक़ी
मदिरा ढलने पर क्या होगा!

निंदक नियरे पानी बन कर,
चित्त साफ़ करें, धोयें विकार,
शत्रु भी कर दें सावधान
हों पग बढ़ने को जब तैयार
खलनायक में जब राम छिपा,
प्रभु प्रगट हुए तो क्या होगा!
नज़रों से ग़श आया साक़ी
मदिरा ढलने पर क्या होगा!

काँटे भी रक्षा करने को
तैयार खड़े हैं होशियार,
फूलों का उपवन क्यों चाहूँ
हर कली सुगंधित है अपार
जुगनू की जगमग अति सुन्दर
पूनम की रात में क्या होगा
नज़रों से ग़श आया साक़ी
मदिरा ढलने पर क्या होगा!

मोबाईल का यारों क्या कहना

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

देखो किस की बजी है घंटी
कुछ ढूँढ़ें अपने पर्सों को
या कोई टटोलें पाकेट को
कोई देखें अपनी खीसों को
धोती या लुँगी की अंटी को
अगल-बगल सब देखें सोचें
हो सकता है मेरे फ़ोन की घंटी हो
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

कभी किसी की बज सकती है घंटी
मास्टर हों या स्कूल के बच्चे
पंडित, पादरी जी अच्छे-अच्छे
भाई लोग या गली के लुच्चे
कोठी, महल या मकान हों कच्चे
हो दुख का मौका या ब्याह रचे
घंटी बजने पर सब उठ के नच्चें
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

इस फ़ोन की अजब कहानी है
बदसूरत मोटा भद्दा सा होता था पहले
जब भी गुर्राता सब का दिल दहले
किलो सा भारी चंद शान से ले लें
इक्के दुक्के पैसे वाले रौब से बोलें
हम ने लिया था सब से पहले
बहुत न लेते कहते
शायद ही लाइन मिले
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

सस्ते हुए तो लगे गिने चुने लेने
राजनीतिक नेता या ऊँची पदवी वाले
कुछ हाथ पकड़ पब्लिक में ले खेलें
ऊँचे स्वर बाज़ार हाट में बोलें
बगल में बैठे हुए लोगों के सामने
राज़ अपना खोलें
ललचाई नज़रों से देखें जनता के भोले
बेबस बेचारे बेहूदा हरकत भी झेलें
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

अब पतले सुंदर रंग रंगीले हैं
गोभी गाजर मूली के भावों बिकते हैं
सब्जी वाले घटों बातें करते दिखते हैं
हर दूजे दिन मॉडल नए निकलते हैं
अपने छोड़ दूजे का ले खिसकते हैं
बिन मौके कई दिखला इतराते हैं
जब घूर-घूर सब देखें पछताते हैं
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

इस के फ़ायदे और नुकसान भी हैं
यदि पतिदेव की बाहरवाली से पटती हो
घरवाली पतिदेव की
खुफ़ियागिरी कर सकती है
कुछ रात भर बातें कर नहीं थकते हैं
ग़लत लोगों से मुलाक़ात कर फँसते हैं
कार चलाते बातें करने वाले टकराते हैं
बिन मौत दूजों को मार
खुद भी मारे जाते हैं
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना
इस के 'सिम' की बात निराली है
सिम-सिम खुलता बंद हो जाता है
नाटा सा नैटवर्कों से बात करवाता है
दूर देश में अपनों से मिलवाता है
साइंसदान कुछ ऐसा हमें बतलाते हैं
कहीं कैंसर हो न जाए समझाते हैं
सावधानी बरतने वाले नहीं पछताते हैं
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

इस ससुरे के हैं कई नाम और काम
बोलो तो ब्लूबेरी पर बन बैठा संगी राम
बिन बिजली के तार
कर लो बात हर गाँव
ई-मेल, फ़ैक्स करो या 'एस-एम-एस'
स्मार्ट फ़ोन रस्ता बतलाता धूप और छाँव
राजन अब इस जैसा
दूजा न कोई गुलाम
दुख-सुख का साथी भोला-सा चेला-राम
इस मोबाईल का यारों क्या कहना
अब इस बिन मुश्किल है जीना

एक दुनिया - अनेकों संस्कृतियाँ (भाग १)

-शिंजिनी एलावादी, भारत

बहुत से लोगों ने 'तीसरी संस्कृति' के बारे में नहीं सुना होगा। तीसरी संस्कृति से जुड़े हुये लोग वे होते हैं जो दुनिया के अलग-अलग भागों में पल-बढ़ कर वहाँ की संस्कृतियों को अपने अन्दर समेट लेते हैं। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ कि मैं इसी तीसरी संस्कृति से जुड़कर, भारत एवं ऑस्ट्रेलिया जैसी दो समांतर संस्कृतियों का अनुभव कर सकी।

ऑस्ट्रेलिया में शिक्षा प्राप्त करने का अनुभव सदा मेरी स्मृति में जीवित रहेगा। वहाँ पर मुझे अपने मित्रों, सहपाठियों तथा अपने शिक्षकों से बहुत कुछ सीखने को मिला। ऑस्ट्रेलिया के एक विद्यालय में प्रवेश लेने के पहले, जिन भारतीय विद्यालयों में मैं पढ़ती थी, वहाँ व्यवहार, अनुशासन एवं सौम्य वेश पर कड़ा ध्यान दिया जाता था। गुरु-शिष्यों का सम्बन्ध, सम्मान एवं ईमानदारी के मूल्यों पर आधारित था। ऑस्ट्रेलिया की पाठशाला में लड़कियाँ किसी भी तरह के बाल बना कर आ सकती थीं, यह मुझे बहुत ही रोमांचक लगता था। भारत में वही रोज़ की दो चोटियाँ बना कर पाठशाला जाने से यह बहुत बड़ा और अच्छा बदलाव था। शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच रिश्ता कुछ हद तक मित्रों जैसा था। ऑस्ट्रेलिया में शिक्षक के कक्षा में आने पर, सभी विद्यार्थियों द्वारा खड़े हो कर स्वागत नहीं किया जाता। बचपन से डाली हुई इस आदत को बदलने में मुझे कुछ समय लगा। बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर भारत में अत्यन्त ध्यान दिया जाता है। माता पिता अपने बच्चों से अधिकतम नम्बर लाने की उम्मीद लगाये बैठे रहते हैं और इससे बच्चों में तनाव बढ़ता है। परन्तु इस का एक सकारात्मक पहलू भी है कि छात्रों में आगे के जीवन में आने वाले तनाव और दबाव से निपटने की क्षमता आ जाती है।

(क्रमश:)

मेल्बर्न भारतीय समाज के लोकप्रिय नेता, डा० मार्तण्ड जोशी का निधन

मेल्बर्न में भूतपूर्व अवैतनिक वाणिज्यदूत, रॉयल मेल्बर्न इंस्टीट्यूट आफ़ टेक्नालोजी में भूगर्भ-शास्त्र के भूतपूर्व प्राध्यापक तथा सेन्ट्रल क्वीन्सलैण्ड यूनिवर्सिटी में अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाता डा० मार्तण्ड जोशी का २५ मई,२००९ को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। इस अवसर पर हम उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें सहन शक्ति दे।

डाक्टर जोशी मेल्बर्न भारतीय समाज के एक प्रमुख नेता थे और भारतीय समुदाय की भरसक सहायता करते थे। वे न केवल एक प्राध्यापक बल्कि पुरोहित व सम्पादक भी थे। वे ऑस्ट्रेलिया इण्डिया सोसायटी ऑफ़ विक्टोरिया द्वारा प्रकाशित पत्रिका, 'ऑस्ट्रल इण्डिया' और आर०एम०आई०टी० के भूगर्भ-शास्त्र विभाग से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अर्थली गॉसिप' के सम्पादक भी रह चुके थे।

बम्बई (अब मुम्बई) विश्वविद्यालय से बी०एस०सी० (आनर्स) एम०एस०सी० (भूगर्भ शास्त्र) की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् कुछ समय तक उन्होंने कलकत्ता (अब कोलकाता) में भारतीय भूगर्भ विभाग में वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर काम किया। उसके पश्चात्, अमेरिका जा

कर, उन्होंने कैलीफ़ोर्निया विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की और कुछ वर्षों तक प्रिंसटन तथा कैलीफ़ोर्निया विश्वविद्यालयों में 'ट्यूटर' तथा जॉर्जिया विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर काम किया।

सन् १९७० में उन्होंने मेल्बर्न में आर०एम०आई०टी० में भूगर्भ-शास्त्र के व्याख्याता का पद ग्रहण किया और अपनी योग्यता के बलबूते पर प्राध्यापक के पद तक पहुँचे।

मेल्बर्न के भारतीय समुदाय में उन्होंने अपने स्नेही स्वभाव और कर्मठता के कारण, एक विशिष्ट स्थान बनाया और पहले भारत के कार्यवाहक वाणिज्यदूत (अवैतनिक) तथा बाद में वाणिज्यदूत (अवैतनिक) के पद पर काम किया।

डा० जोशी बहुत विनम्र व्यक्ति थे और कोई भी उन से आसानी से बात कर सकता था। आर०एम०आई०टी० से अवकाश प्राप्त करने के बाद वे मोनाश विश्वविद्यालय में एक कन्नड़ कवि पर शोधकार्य कर रहे थे और सेन्ट्रल क्वींसलैण्ड विश्वविद्यालय में अन्तरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिये परामर्शदाता का काम कर रहे थे। उनके निधन से मेल्बर्न के भारतीय समाज ने एक महत्वपूर्ण सदस्य व प्रतिनिधि खो दिया है।

कहानी

समय शेष (भाग ५)*

- युगल

(इस कहानी के पिछले भागों में आपने पढ़िये। -सम्पादक।)

पढ़ा कि दूध लेने के स्थान पर किस प्रकार दशरथ बाबू की एक वृद्ध महिला से भेंट हुई और उनकी टूटी चप्पल देख कर, दशरथ बाबू ने उन्हें अपनी चप्पल दे दी। दूसरे दिन, सुमित्रा ने दशरथ बाबू की चप्पलें लौटा दीं और नंगे पैर दूध लेने आने लगी। धीरे-धीरे, दोनों ने एक दूसरे का नाम जान लिया और दूध की वैन की प्रतीक्षा करते समय आपस में बातें करने लगे। बातों का मुख्य विषय होता था राजनीति... कि कौन कौन नेता चोर है और अपराधों में डूबा हुआ है। जब कई दिन तक दशरथ बाबू नहीं दिखे तो एक दिन सुमित्रा उनके घर पहुँच गई पता चला कि वे गाँव गये हुए हैं, पता नहीं कब तक लौटें। दशरथ बाबू की बहू, निनी ने आग्रहपूर्वक उन्हें चाय पिलायी। उसका अच्छा व्यवहार देखकर, सुमित्रा का मन भर आया, कंठ सिक्त हो गया। लीजिये, अब आगे की कहानी

बहू ने वृद्ध महिला को गौर से देखा। वह जाने के लिए मुड़ गई थीं।

पुरुष ने पूछा-"पिताजी आएंगे, तो मैं उनसे क्या कहूँगा?"

"कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। कई दिनों से उन्हें नहीं देखा तो लगा, कहीं बीमार-वीमार...!" सुमित्रा ने अपनी पीठ पर दरवाजा खींच लिया। दरवाज़े में स्वत: ताला लग गया।

पति-पत्नी एक दूसरे को क्षण-भर देखते रहे। पत्नी ने पूछा-"कौन हैं यह?"

"बूथ पर इन्हें देखा है। कौन है, यह तो मैं भी नहीं जानता। और मैं जान कर क्या करूँगा? पिताजी जानते हैं, बस। पिताजी जिसे जानें उसे मैं भी जानूँ यह कोई ज़रूरी तो नहीं।"

पत्नी बोली-" हाँ ज़रूरी तो नहीं। लेकिन वह पिताजी को लेकर जिस तरह चिन्तित थीं इससे क्या यह नहीं लगता कि वह ज्यादा क्लोज़ हैं?"

"देखो निनी, बुढ़ापा एक अजीब सी उम्र है। क्या तुम्हारे पास समय है कि तुम पिताजी के पास बैठकर बातें करो? क्या मेरे पास समय है? अगर समय बचाएँगे भी, तो दस-पाँच मिनट में बात ख़त्म हो जाएगी। और बच्चे बूढ़े के पास कुछ देर बैठ लेंगे, लड़-लड़ा लेंगे, फिर दूसरे बच्चों में जा मिलेंगे। बुढ़ापे के इस अकेलेपन के ख़ालीपन को कहीं तो भरना होगा। एसोसिएशन के लिए आदमी हम-उम्र की तलाश में रहता है। कोई तो सुनने वाला, कहने वाला पास हो। मन की इस भूख को उस उम्र में जाकर समझोगी।" शुभेंदु ने पत्नी को समझाया।

उस दिन वैन साढ़े सात बजे तक नहीं आई, तो सुमित्रा ने शुभेन्दु से कहा - "बेटे, और कितनी देर इंतज़ार करोगे? कूपन दे दो, मैं दूध लिये आ रही हूँ"

और उसने शुभेन्दु के हाथ से पॉली बैग ले लिया।

सुमित्रा जब दूध ले कर पहुँची, तो निनी ने कहा-"माँ जी, आपने नाहक तकलीफ़ की। दस-पाँच मिनट बाद तो वैन आ ही गई।"

सुमित्रा बोली-"देखो बेटी, मर्दों को दस काम होते हैं। और मुझे तो वहाँ ठहरना ही था। तो एक ही काम के लिये दो-दो आदमी क्यों उलझे रहते?"

उस दिन निनी ने इतना जाना कि सुमित्रा के दो लड़कियाँ हुईं और एक लड़का। घर के मालिक कोई कर्ज़ छोड़ कर नहीं मरे।

"दोनों बेटियाँ अपनी ज़िंदगी में ही ब्याह डाली थीं। लड़का भी बैंक की नौकरी में लग चुका था। उन्होंने समझा, उनका दायित्व ख़त्म हो गया। चले गए। सुमित्रा को मझधार में छोड़कर!" बताते-बताते सुमित्रा का गला भर आया था। सुमित्रा ने यह भी बताया कि इस कालोनी में मकान उन्होंने ही लिया था। अच्छी ख़ासी दुकान थी।

चलते-चलते सुमित्रा ने कहा-"बेटी, देखने से लगता है, इस घर में सुख है, आनन्द है। बेटी, इस घर के स्वर्ग को बनाये रखना। सास गाँव में रहती हैं क्या?"

निनी बोली-"नहीं। बाबू जी रिटायर हुये, उसके दो साल बाद ही..."

सुमित्रा ठमक कर खड़ी हो गईं। प्रश्नाकुल दृष्टि निनी पर टिक गई।

निनी कह रही थी-"बीमार होकर बिस्तर से लग गईं। तीन महीने तक बिस्तर पर पड़ी रहीं। पड़े-पड़े सब कर्म होता था। बाबूजी का जीवट कहिए, माँ की तरह अम्मा की सेवा में लगे रहे। पता नहीं, उस बीच वह कभी सोये भी या नहीं। जब देखिए, आरामकुर्सी में अम्मा के पंलग के बगल में बैठे हैं।

(क्रमश:)

* आजकल के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

गुरु अर्जुन का शहीद-दिवस (१६ जून), अमेरिका,भारत/पाकिस्तान आदि में पितृ-दिवस (२१ जून), रथ-यात्रा (२४ जून), सिक्खों के गुरु हरगोविन्द जी का जन्म दिवस (५ जुलाई), बुद्ध धर्म अनुयायियों का धर्म-दिवस (७ जुलाई)।

सूचनाएँ

१. **महफ़िल-नाइट** (शुक्रवार, १९ जून)
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक।
सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२. **साहित्य-संध्या/कवि गोष्ठी**
(शनिवार, ४ जुलाई)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर
क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५डी ६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये -
हरिहर झा (९५५५-४९२४), नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२,
सुभाष शर्मा(०४३३)१७८३७७, ई-मेल-sharmalog@gmail.com
नियमित रूप से साहित्य संध्या के कार्यक्रमों के बारे में सूचना प्राप्त करने तथा अप्रैल, २००९ में
हुए हास्य-कवि सम्मेलन की फ़ोटुएँ देखने के लिये निम्नलिखित वेबसाइट देखिये-
http://groups.google.com.au/group/sahityasandhya/

अब हँसने की बारी है

१. स्त्रियों को देखने का समय

महिला चिकित्सक (क्रोध से) - तुम रोज़ सुबह अस्पताल के बाहर खड़े हो कर स्त्रियों को क्यों घूरते रहते हो?
रमेश (महिला चिकित्सक से) - मैडम, अस्पताल के बाहर ही तो लिखा है स्त्रियों को देखने का समय सुबह ९ बजे से ११ बजे तक।

२. विवाह की बात

प्रेमी (प्रेमिका से) - डार्लिंग, मैं तुम से विवाह नहीं कर सकता, घर वाले मना कर रहे हैं।
प्रेमिका (प्रेमी से) - तुम्हारे घर में कौन-कौन है?
प्रेमी (प्रेमिका से) - एक पत्नी और दो बच्चे।